भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए 13वां साप्ताहिक परामर्श, 3 से 9 सितम्बर, 2024 तक

हरियाणा		वास्तविक वर्षा (मिमी)					अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अगस्त/सितम्बर					सितम्बर				
		30	31	01	02	03	05	06	07	08	09
	हिसार	0	0	0	0	0	12	5	4	4	1
	जींद	1.7	0	0	0	0	18	6	6	4	3
	सिरसा	1	10	0	0	0	10	5	1	2	1
	रोहतक	15	19	0	0	0	3	2	5	4	2
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, फसल फूल आने से लेकर गूलर विकास की अवस्था में 84 से 133 दिन की है। उन क्षेत्रों में फूलों की संख्या उपयुक्त है जहां वर्षा न्यूनतम थी। अधिकांश खेत खरपतवार से मुक्त हैं लेकिन बारिश के बाद कुछ खेतों में मोथा, मकरा, संथी, हिरन खुरी और दूब जैसे खरपतवार देखे गए। फसल की वृद्धि के अनुसार खुरपा/फावड़े अथवा यांत्रिक निराई-गुड़ाई करें। सफेद मक्खी की आबादी केवल कुछ स्थानों पर आर्थिक सीमा से ऊपर है जहां कम वर्षा हुई थी। जैसिड की आबादी कुछ क्षेत्रों में ईटीएल को पार कर रही है और थ्रिप्स अधिकांश क्षेत्रों में ईटीएल से नीचे है। पिछले सप्ताह के दौरान गुलाबी सूँडी के पतंगो की संख्या में वृद्धि है, और गुलाबी सूँडी का संक्रमण कई खेतों में फूलों और गूलरों पर दिखाई देने लगा है। जड़ सड़न और मुरझाने के कुछ मामले देखे गए। कई स्थानों पर कपास पत्ती मुड़न वायरस रोग भी देखा गया। कुछ खेतों में जहां अधिक वर्षा हुई थी वहां गूलर सड़न की घटनाएँ भी देखी गयी।

सिरसा में फसल फूल आने और गूलर बनने की अवस्था में है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान बादल, बरसात और गर्म आर्द्र मौसम बना रहा। ट्रैक्टर/बैल द्वारा अंतर-कृषि संचालन, हाथ से निराई-गुड़ाई, खरपतवार प्रबंधनऔर चूसक कीटों और पीबीडब्ल्यू के लिए यूरिया की दूसरी विभाजित खुराक प्रसारण और कीटनाशक छिड़काव का उपयोग किया गया। कुछ स्थानों पर कीटनाशकों और कवकनाशी छिड़काव का टैंक मिश्रण देखा गया। कुछ किसानों ने टैंक में सूक्ष्म पोषक तत्व यानी एनपीके, बोरॉन, ज़िंक आदि को कीटनाशक के साथ मिलाकर छिड़काव किया, सभी स्थानों पर खरपतवार दिखाई देने लगे हैं। सभी स्थानों पर स्क्वायर, फूल और गूलरों का बनना जोरों पर है। सफेद मक्खी का संक्रमण 18-51/3 पत्तियों के बीच, लीफ हॉपर 4-16/3 पत्तियों के बीच, थ्रिप्स ईटीएल से नीचे और गुलाबी सूँडी का संक्रमण हरे गूलर क्षति के आधार पर ईटीएल (5-10%) से ऊपर पाया गय। कुछ स्थानों पर कालिखयुक्त फफूंद (बहुत कम) और कपास पत्ती मुड़न वायरस रोग की घटनाएं भी देखी गईं।

सलाह:

हिसार में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे बारिश के बाद अतिरिक्त पानी निकाल दें और प्रति एकड़ 1 बैग की दर से यूरिया की तीसरी खुराक डालें। सिंचाई या वर्षा के बाद स्वयं या यांत्रिक निराई-गुड़ाई करें। 100 दिन से अधिक पुरानी कपास की फसल में, विशेष रूप से हल्की मिट्टी में, 2.0% यूरिया + 0.5% $ZnSO_4$ (21%) का पर्ण छिड़काव करें। कपास की फसल में जहां फूल आना शुरू हो गया है, गुलाबी सूँडी के लार्वा के संक्रमण के लिए प्रति एकड़ कम से कम 150 से 200 फूलों और 20 गूलरों की जांच करें। गुलाबी इल्ली की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन ट्रैप लगाएं। कपास की फसल में शुरुआती मौसम के रोसेट फूलों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। रोसेट के फूल, यदि कोई हों, हटा दें और नष्ट कर दें। यदि फूलों या हरे गूलरों में गुलाबी बॉलवॉर्म की घटना 5 प्रतिशत (ईटीएल) से ऊपर है, तो प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिलीलीटर/एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड जैसे रस चूसने वाले कीटों के प्रबंधन के लिए फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम या एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी @ 400 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। 15 सितंबर तक कपास के उन खेतों में सिंथेटिक पाइरेथ्रोइड्स का उपयोग न करें जहां सफेद मक्खी आर्थिक सीमा स्तर को पार कर रही है। प्रारंभिक लक्षण वाले पौधों और आस-पास के स्वस्थ पौधों के बचाव के लिए प्रभावित पौधों को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 2 ग्राम प्रति लीटर पानी से भिगोकर खेत में जड़ सड़न से प्रभावित क्षेत्र का इलाज करें। बाढ़ सिंचाई से पहले जड़ सड़न प्रभावित

क्षेत्रों को मेड़ बनाकर सीमित कर दें ताकि इस बीमारी को आगे फैलने से रोका जा सके। शुरुआती मौसम में कपास के लीफ कर्ल वायरस से संक्रमित पौधों को उखाड़कर गाड़ दें। पैराविल्ट के मामले में, प्रभावित पौधों पर लक्षण दिखाई देने के तुरंत बाद कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें। कालिखयुक्त फफूंद के प्रबंधन के लिए, सफेद मक्खी के लिए छिड़काव के अलावा, कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 WP @ 2-3 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें। साप्ताहिक अंतराल पर और वर्षा के बाद नियमित रूप से खेतों की निगरानी करें।

सिरसा में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अंतर-कृषि संचालन जारी रखें। सिंचाई या बारिश के बाद, नाइट्रोजन उर्वरक की तीसरी विभाजित खुराक डालें। स्क्वायर, फूल और गूलरों को बेहतर बनाए रखने के लिए, एनपीके 13:00:45 @ 2 किग्रा/100 लीटर पानी डालें और 10 दिनों के अंतराल पर 2-3 बार दोहराएं। यदि फसल स्क्वायर, फूलों और गूलरों के साथ पूरे जोरों पर है और पत्तियां लाल हो रही हैं, तो प्रति एकड़ 100 लीटर पानी में 1.0 किलोग्राम मैग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें और एक पखवाड़े के बाद इसे दोहराएं। फसल की पंक्तियों के बीच खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए निर्देशित छिड़काव (सुरक्षात्मक हुड का उपयोग करके) के रूप में 2,250 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर ग्लूफ़ोसिनेट अमोनियम का छिड़काव करें। छिड़काव के लिए प्रति एकड़ 200-250 लीटर पानी का प्रयोग करें। कीट-पतंगों के संक्रमण की नियमित निगरानी करें। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन जाल और सफेद मक्खी के प्रबंधन के लिए 40 कम लागत वाले पीले चिपचिपे जाल लगाएं। सफेद मक्खी के वयस्कों को डायफेनथियुरोन 50% डबल्यूपी @ 240 ग्राम/एकड़ (खेत या तो सिंचित होना चाहिए या वर्षा प्राप्त हुआ होना चाहिए) या एफिडोपाइरोपेन 50 डीसी@ 400 मिली/एकड़ या डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़के छिड़काव द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। थ्रिप्स को नियंत्रित करने के लिए स्पिनेटोरम 11.7% एससी @ 170 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। यदि कालिखयुक्त फफूंद दिखाई देती है, पत्तियां चिपचिपी हो जाएंगी या यदि सफेद मक्खी की निमफल आबादी अधिक है, तो पहले वयस्क के उभरने के 3-5 दिन बाद पाइरिप्रोक्सीफेन 10 ईसी @ 400 मिलीलीटर या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी @ 240 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें। उपचारात्मक उपाय के रूप में प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @1 मिली/लीटर या मैंकोज़ेब 30% डबल्यूडीजी @ 2.0 ग्राम/लीटर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (COC) 50 डबल्यूपी @ 2.5 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव दोबारा करें। जैसिड संक्रमण को डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम या टॉल्फ़ेनपाइराड 15 ईसी @ 400 मिली या फेनपाइरोक्सिमेट 5% ईसी @ 300 मिली/एकड़ की दर से छिड़काव करके प्रबंधित करें। रोसेट फूल को नष्ट कर दें और यदि पीबीडब्ल्यू संक्रमण फूल के आधार पर ईटीएल को पार कर जाता है यानी प्रति एकड़ देखे गए 100 में से 10 या अधिक फूल संक्रमित हैं या 20 में से 2 गूलर पीबीडब्ल्यू से संक्रमित हैं, या लगातार 3 रातों तक प्रति रात 5-8 नर पतंगे/ ट्रैप दिखते हैं, तो प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 200 मिली/एकड़ या थायोडिकार्ब 75 डब्ल्यूपी @ 250 ग्राम को 150 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। पैराविल्ट के लक्षण दिखाई देने पर, प्रभावित पौधों पर तुरंत (24 घंटे के भीतर) कोबाल्ट क्लोराइड 10 मिलीग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

राजस्थान		वास्तविक वर्षा (मिमी)					अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अगस्त/सितम्बर					सितम्बर				
		30	31	01	02	03	05	06	07	08	09
	अजमेर	10.2	0	0.2	0	0	30	30	22	42	22
	जोधपुर	0.5	0	23.4	0	0	22	10	24	12	10
	नागौर						20	16	18	16	6
	पाली	0	0	0	0	0	18	36	30	20	30
	श्री गंगानगर	0	12	0	0	0	2	2	1	2	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में, फसल स्क्वायर और फूल बनने की अवस्था में 56 से 84 दिन की है। खरपतवार प्रबंधन और उर्वरक अनुप्रयोग के लिए अंतरसांस्कृतिक संचालन किया गया। खेत खरपतवार से मुक्त हैं, जैसिड का संक्रमण ईटीएल के ऊपर और सफेद मक्खी का संक्रमण ईटीएल के नीचे देखा गया। अब तक बीमारियों की कोई घटना सामने नहीं आई है।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, फसल स्क्वायर गठन, फूल और विकास चरण में 88 से 123 दिन की है। बुआई के बाद सिंचाई कर दी गई है। हाथ से निराई/गुड़ाई और अंतर-कृषि संचालन प्रगति पर हैं। जैसिड की आबादी 0.11 से 2.69/3 पत्तियां, सफेद

मक्खी की आबादी 2.41 से 19.34/3 पत्तियां और थ्रिप्स की आबादी 0 से 4.72/3 पत्तियां दर्ज की गईं। ग्रेड III तक के कपास पत्ती मुड़न रोग के लक्षण कुछ क्षेत्रों में दिखाई देने लगे हैं।

सलाह:
दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर,, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे समय पर खेतों से अतिरिक्त बारिश का पानी निकाल दें। यदि आवश्यक हो, तो फसल अवस्था के अनुसार नाइट्रोजन उर्वरकों की अनुशंसित खुराक खुराक देने की सलाह दी जाती है। जल्दी बोई गई कपास में रसचूसक कीटों के प्रकोप पर नजर रखें। यदि ईटीएल के पास किसी भी चूसने वाले कीट के संक्रमण की सूचना मिलती है, तो नीम आधारित कीटनाशक या एनएसकेई 5% + नीम का तेल 5 मिलीलीटर / लीटर या नीम तेल आधारित फॉर्मूलेशन 5 मिलीलीटर / लीटर (300 या 1500 पीपीएम) + 0.05% सर्फेक्टेंट का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड की घटनाओं की निगरानी के लिए 8-10/एकड़ पीले चिपचिपे जाल लगाएं। चूसक कीटों का संक्रमण ईटीएल के ऊपर होने पर फ्लोनिकैमिड 50% डब्लूजी @ 80 ग्राम/एकड़ या डाइनोटफ्यूरान 20% एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ या इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एसएल @ 60 मिली/एकड़ या टॉल्फ़ेनपाइरोड 15% ईसी @ 400 मिली/एकड़ या फेनपाइरोक्सिमेट 5% ईसी @ 300 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। पीबीडब्ल्यू के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन जाल स्थापित करें। वैधता के अनुसार फेरोमोन ट्रैप बदलें। रोसेट फूल, यदि कोई हों, हटा दें और नष्ट कर दें। यदि फूलों या हरे रंग के गूलरों में गुलाबी सूँडी की घटना 5 प्रतिशत (ईटीएल) से ऊपर है, तो प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिलीलीटर/एकड़ या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, किसानों को सलाह दी जाती है कि जहां भी फसल 80 दिन से अधिक पुरानी हो, वहां 2% पोटेशियम नाइट्रेट का छिड़काव करें। कीटों और बीमारियों के लिए फसल की नियमित निगरानी करें। घटना के प्रारंभिक स्तर पर चूसने वाले कीटों और पीबीडब्ल्यू संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए एनएसकेई 5% + नीम फॉर्मूलेशन @ 5 मिलीलीटर/लीटर या नीम तेल आधारित फॉर्मूलेशन 5 मिलीलीटर/लीटर (300 या 1500 पीपीएम) + 0.05% सर्फेक्टेंट का छिड़काव करें। चूसक कीटों का संक्रमण ईटीएल के ऊपर होने पर फ्लोनिकैमिड 50% डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम/एकड़ या डिनोटफ्यूरान 20% एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ या इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एसएल @ 60 मिली/एकड़ या टॉल्फ़ेनपाइरोड 15% ईसी @ 400 मिली/एकड़ या फेनपाइरोक्सिमेट 5% ईसी @ 300 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। थ्रिप्स संक्रमण के मामले में, स्पिनेटोरम 11.7 एससी @170 मिली/एकड़ या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी @ 600 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। जब भी पीबीडब्ल्यू की संख्या ईटीएल को पार कर जाए, तो किसी भी कीटनाशक जैसे इमामेक्टिन बेंजोएट 5% एसजी @ 100 ग्राम/एकड़ या प्रोफेनोफॉस 50% ईसी @ 600 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करें। पिछले वर्ष गुलाबी सूँडी से प्रभावित पाए गए स्थानों की बारीकी से निगरानी करें। गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 2 फेरोमोन जाल स्थापित करें। कपास में गूलर सड़न रोग और कवक पत्ती धब्बों के प्रबंधन के लिए प्रोपीनेब 70% WP @ 2.5-3 ग्राम/लीटर या प्रोपिकोनाज़ोल 25 EC @ 1 मिली/लीटर या कार्बेन्डाजिम 50 WP @ 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी का पत्तियों पर छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।

मध्य प्रदेश		वास्तविक वर्षा (मिमी)					अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अगस्त/सितम्बर					सितम्बर				
		30	31	01	02	03	05	06	07	08	09
	खरगाँव										
	धार	1.6	0	0	0.2	30.8	118	24	43	35	80
	खांडवा										
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:
खंडवा में, बोई गई फसल 63 से 111 दिन पुरानी है, जो वानस्पतिक /स्क्वायर / फूल / गूलर बनने की अवस्था में है। खेत की स्थितियों की व्यवहार्यता के आधार पर स्पॉट निराई, फर्टिगेशन और पौधों की सुरक्षा के उपाय किए गए। पर्याप्त वर्षा होने के कारण सिंचाई नहीं की गई। खेतों में खरपतवार हावी हो गए हैं। कुछ खेतों में जैसिड और सफेद मक्खी का प्रकोप देखा गया है। कुछ स्थानों पर बैक्टीरियल ब्लाइट, कोरिनेस्पोरा और सर्कोस्पोरा पर्ण धब्बों की घटना देखी गई है।

सलाह:
खंडवा में किसानों को रासायनिक उर्वरक की तीसरी और चौथी खुराक देने की सलाह दी जाती है। जिस क्षेत्र में फसल 35 दिन से अधिक पुरानी हो गई हो, उस क्षेत्र में बैलचालित कोलपा से निराई-गुड़ाई शुरू करें। नम मिट्टी की स्थिति में जहां हाथ से निराई करना संभव नहीं है, वहाँ घास वाले खरपतवारों के प्रबंधन के लिए क्विज़ालोफॉप इथाइल 5% ईसी @ 2 मिलीलीटर/लीटर पानी, चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार के लिए या पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.5 मिलीलीटर/लीटर पानी जैसे शाकनाशी का

प्रयोग करें। घास और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार, दोनों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% + क्विज़ालोफॉप एथिल 4% एमईसी @ 2-2.5 मिली /लीटर पानी का प्रयोग करें।गुलाबी बॉलवर्म संक्रमण की निगरानी के लिए 2/एकड़ की दर से फेरोमोन जाल और सफेद मक्खी की निगरानी के लिए 8/एकड़ की दर से पीले चिपचिपे जाल लगाएं। 90 दिनो से अधिक की उन फसलों में, जिनमें रस चूसने वाले कीटों का प्रकोप ईटीएल पार कर चुका है, डायफेनथियूरॉन 50% डब्ल्यूपी @ 240 ग्राम/एकड़ या डिनोटफ्यूरान 20 एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ या फ्लोनिकामिड 50 डब्लूजी @ 80 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें। कपास में बोंड सड़न रोग और पत्ती धब्बों वाले रोगो के प्रबंधन करने के लिए (कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% WP) @30 ग्राम या प्रोपीनेब 70% WP @2.5-3 ग्राम/लीटर या प्रोपिकोनाजोल 25 EC @1 मिली/लीटर या कार्बेन्डाजिम 50 WP @0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी का पत्तियों पर छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।

द्वारा अनुवादित: डॉ पूजा वर्मा एवं डॉ रचना पांडे